

# ‘शांति’ जीते-जागते मनुष्य के लिए है!

जिस बात को मैं आप लोगों के सामने रखना चाहता हूँ, वह बात आप अपने हृदय से पकड़ने की कोशिश कीजिए, दिमाग से नहीं। यह बात समझिए कि आपके अंदर एक ऐसी चीज है, जिससे कि आपको परमशांति मिल सकती है। परंतु लोग करते क्या हैं कि अपनी दुनियादारी का जो कुआं है, उसी में रहकर एक दायरा बनाते हैं और कहते हैं कि “क्या आप जिस शांति की बात करते हैं, वह ऐसी होगी?”

तो समझने की बात है। सबकी अपनी-अपनी तकलीफें हैं और उन तकलीफों से बचने के लिए लोग तरह-तरह के प्रबंध करते हैं। जब शांति की बात आती है तो लोग यही समझते हैं कि शांति भी ऐसी ही कोई चीज होगी, जो उनको उस दुख से बचा ले। पर शांति ऐसी चीज नहीं है। मान लीजिए कि उधर खूब गाना-बजाना हो रहा है और मैं बात कर रहा हूँ शांति की, जो आपके अंदर है तो आपका ध्यान कभी उधर जाता है, कभी इधर जाता है। क्योंकि एक चीज तो सुनना चाहती है और दूसरे हैं ये कान, जिनको यह नहीं कहा जा सकता कि “तुम सिर्फ यही बात सुनो।” जो भी आवाजें कान में पड़ेंगी, उनको वही सुनाई देगी।



समझने की बात है कि दुनिया के अंदर हमारे साथ भी यही हाल है। बाहर गाना बज रहा है और उसको देख करके आदमी भ्रमित होता है। उसको देखकर कहता है कि “नहीं, मुझको यह चाहिए।” आप जानते हैं कि जब बच्चा छोटा होता है, अगर उसको तमाशे में ले जाइए, नुमाइश में ले जाइए, तो उसका ध्यान कहां जाता है? गुब्बारों की तरफ जाता है, खिलौनों की तरफ जाता है। उसको मां-बाप बार-बार कहते हैं कि “तू ध्यान उधर मत कर, मेरा हाथ पकड़कर रख, वरना खो जायेगा।” परंतु आज आदमी करता क्या है? यह सोचता है कि अब मैं बड़ा हो गया हूं। नहीं, आप अभी बड़े नहीं हुए हैं। सिर्फ खिलौने बदल गये हैं, परंतु आपकी आदत वैसी ही है, जैसी बचपन में थी। पहले सिर्फ मां की आवाज सुनने की बात थी। कहीं अगर कुछ परेशानी हुई तो कहते थे, “मेरी मां कहां है?” अब वह सब बदल गया है। अब सारी चीजें सुनने के लिए आदमी तरसता है। हर एक चीज मनुष्य के लिए मनोरंजन के लिए हो गया है। मन-ओ-रंजन! हृदय का रंजन खत्म हो गया और सबकुछ मनोरंजन के लिए हो गया है। आप चाहे इस बात को मानिए या न मानिए, परंतु आपके हृदय के अंदर एक प्यास लगी हुई है। वही प्यास आपको बार-बार खोजने के लिए परेशान करती है। वही प्यास है, जो बार-बार यह कहती है कि “मुझे उस चीज से मिलाओ, उस चीज के दर्शन कराओ, जिससे मैं शांत हो जाऊं। तेरी बनाई हुई चीजें नहीं, तेरी परिभाषाएं मुझे नहीं चाहिए। इनसे मेरी संतुष्टि नहीं होगी। मैं तो तब संतुष्ट होऊंगा, जब मुझे उस चीज से मिलाओगे, जो मेरी प्यास को बुझा सके। सच्चे अनुभव की बात होनी चाहिए, सिर्फ शब्दों की बात नहीं।”

जब मैं तीन साल का था, तब से मैं लोगों के आगे इस विषय पर बोलते आ रहा हूं। मुझे इस विषय पर चर्चा करते हुए, इस विषय पर बोलते हुए कितने ही साल हो गये हैं। यूं तो इस संसार में मुझसे भी ज्यादा अच्छा बोलने वाले होंगे, परंतु जहां अनुभव की बात है, उसकी बात अलग है। जब अनुभव की बात आएगी, आप वहां क्या करेंगे? मैं सिर्फ बोलता ही नहीं हूं, मैं सिर्फ शब्दों का प्रयोग नहीं करता हूं, मैं अनुभव की बात करता हूं और अनुभव करवाता भी हूं। ऐसी बात नहीं है कि मैं प्यासे के सामने सिर्फ पानी की फोटो बेचूं, कुएं की फोटो या कुएं के प्लान बेचूं। नहीं, मैं तो पानी की बात करता हूं। मैं कहता हूं कि जब तक आपको पानी नहीं मिलेगा, जब तक प्यासे को पानी नहीं मिलेगा तो फोटो किस काम की? जब प्यास नहीं लगी है, उस समय फोटो की जरूरत हो सकती है, कुएं की फोटो लगाएंगे, इस चीज की फोटो लगाएंगे, उस चीज की फोटो लगाएंगे। परंतु जब असली प्यास लगी होगी तो उस समय फोटो किस काम की? उस समय तो पानी चाहिए! उस समय तो सिर्फ बातों से काम नहीं चलेगा। सिर्फ बातों से कुछ अंतर नहीं पड़ेगा। अगर कोई कहीं रेगिस्तान में सफर कर रहा हो और उसके साथ में पानी नहीं है और उसको प्यास लगे तो उस समय किस चीज की जरूरत है? दुनिया वालों से पूछेंगे कि उस समय किस चीज की जरूरत है तो कोई कहेगा, “प्रायश्चित्त की जरूरत है। इस आदमी को प्रायश्चित्त करना चाहिए, सीखना चाहिए, समझना चाहिए कि जब वह घर से चला था, तभी इसको खूब पानी ले लेना चाहिए था।” क्या प्रायश्चित्त करने से वहां पानी मिल जाएगा? अब तो वह रेगिस्तान के अंदर है। वह अभी जिंदा है, अभी स्वांस चल रही है, प्यास लगी है। अब उसको किस चीज की जरूरत है? क्या उसको लेक्चर की जरूरत है? क्या उसको किताबों की जरूरत है? क्या उसको फोटुवों की जरूरत है? नहीं, उसको उस समय पानी की जरूरत है। अगर यही हादसा आपके साथ हो और कोई आकर कहे कि “आपको प्रायश्चित्त करना चाहिए”, तो क्या आप उससे संतुष्ट हो जाएंगे? या आप चाहेंगे कि ऐसा कोई मिल जाए, जो आपको पानी दे दे। क्योंकि इस संसार के अंदर प्रायश्चित्त करवाने वाले तो बहुत हैं। ऐसे

लोगों की कमी नहीं है, जो कहते हैं कि “तुम पापी हो!” मैं कहता हूँ कि आप पापी नहीं हैं। आपको बनाने वाले ने ऐसा मौका दिया है, आपको यह मनुष्य शरीर दिया है, आपको यह स्वांस दी है। यह सबसे बड़े सौभाग्य का विषय है। यह सबसे बड़ा उपहार है। इसको स्वीकार कीजिए।

यह जो जीवन मिला हुआ है, यह भी एक कुआं है। इस कुएं के अंदर ऐसा पानी है कि अगर इस पानी को आप पीना शुरू करेंगे तो आपकी प्यास बुझती रहेगी, बुझती रहेगी, बुझती रहेगी। आप कहीं भी जाएंगे, कुछ भी करेंगे, आपको किसी भी परिस्थिति का सामना करना पड़े, जब तक आप इस संसार के अंदर जीवित हैं, यह चीज आपके अंदर हमेशा रहेगी। अगर आप इस पानी को निकालना सीख गये तो आपको कभी प्यासा नहीं रहना पड़ेगा। सचमुच में आप इस संसार के अंदर खाली हाथ तो जरूर आये थे, परंतु आपको खाली हाथ जाने की जरूरत नहीं रहेगी।

मैं लोगों को यह नहीं कह रहा हूँ कि आप अपने परिवार को छोड़ दीजिए, आप संन्यास धारण कर लीजिए और हिमालय की चोटी के ऊपर जाकर बैठ जाइए। एक बार मैं किसी से बात कर रहा था तो वह कह रहा था कि “हां, अगर हम यह भी चीज छोड़ दें, यह भी चीज छोड़ दे, वैराग्य हो जाये, ये हो जाये, वो हो जाये तो हमारी जिंदगी के अंदर शांति ही शांति हो जायेगी।” तो मैंने उसको कहा कि जब कोई दिक्कत ही नहीं रहेगी तो शांति का क्या करेंगे? जब कुछ रहा ही नहीं – न कुछ आगे है, न कुछ पीछे है, न किसी की चिंता है, न किसी का कुछ है तो शांति का करेंगे क्या? इस दुनिया के अंदर रह करके अनुभव करना है। जीते-जागते उस चीज का अनुभव करना है। समुद्र में आपको नौका दिखाई दी, इसका तो कुछ तुक बनता है। परंतु रेगिस्तान में कोई नौका ले जा रहा है, इसका क्या कोई तुक बनता है? रेगिस्तान में आदमी नौका का क्या करेगा? यही मैं आपको समझा रहा हूँ कि अगर आप दुखी नहीं होंगे तो सुख का क्या करेंगे? हमारे जीवन में दुख लगा रहता है, इसीलिए तो सुख चाहिए? जिसको प्यास ही नहीं लगी हो तो वह आदमी पानी का क्या करेगा? उसको क्या समझ में आयेगा? मैं कहता हूँ कि जीता-जागता आदमी समझ सकता है। जीता-जागता आदमी समझ सकता है कि इस स्वांस की कीमत क्या है? मुर्दा क्या समझेगा इस स्वांस की कीमत? जब तक आप जीवित हैं, आपके लिए सबकुछ है। आपके लिए सारे प्रसाद उपलब्ध हैं। असली स्वर्ग भी यहां है और असली नरक भी यहां है। अगर आप अपने

---

आपकी जिंदगी के अंदर शांति नहीं होनी चाहिए। क्योंकि आप मनुष्य हैं और यह आपके लिए संभव हो चुका है कि आपके जीवन में, आपकी जिंदगी के अंदर शांति बनी रहे। अगर मैं आपकी जिंदगी के अंदर शांति संभव कर सकूँ तो अच्छी बात है।

---



स्वांस की कीमत को समझ गए तो आपके लिए हर दिन स्वर्ग बन जायेगा। इसी चीज की तो कदर नहीं है! यही तो चीज चलती रहती है। आदमी किसी और चीज की चिंता करता रहता है और हर एक स्वांस के अंदर छिपी हुई है असली शांति!

इसीलिए मैं सब लोगों से कहता हूँ कि आपकी जिंदगी के अंदर शांति होनी चाहिए। अगर मैं आपकी जिंदगी के अंदर शांति संभव कर सकूँ तो अच्छी बात है। अगर मैं नहीं कर सकता हूँ तो इसका मतलब यह नहीं है कि आपकी जिंदगी के अंदर शांति नहीं होनी चाहिए। नहीं, आपकी जिंदगी के अंदर फिर भी शांति होनी चाहिए। जैसे भी हो, मेरे बावजूद हो या न हो, परंतु शांति जरूर होनी चाहिए। क्योंकि आप मनुष्य हैं और यह आपके लिए संभव हो चुका है कि आपके जीवन में, आपकी जिंदगी के अंदर शांति बनी रहे।

महाराजी

**प्रेम रावत** शांति के विषय में चर्चा करने वाले अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के एक वक्ता हैं। लोग उन्हें आदर व प्रेम से महाराजी भी कहते हैं। वे हर व्यक्ति के अंदर स्थित शांति की चर्चा करते हैं। उनके इस संदेश ने विश्व के हर वर्ग के लोगों को आकर्षित किया है। प्रत्येक मनुष्य के अंदर शांति की संभावना को पाने की प्रेरणा देने की उनकी योग्यता के लिए उन्हें कई सरकारी एवं शैक्षिक संस्थानों द्वारा 'शांति के दूत' की उपाधि प्रदान की गई है। प्रेम रावत का यह एक महत्वपूर्ण संदेश है कि आंतरिक शांति हर एक मनुष्य की बुनियादी जरूरत है। वे अपने इस संदेश को विभिन्न किस्से, कहानियों, उदाहरणों व कविताओं के माध्यम से लोगों तक पहुंचाते हैं। उनके जीवन का उद्देश्य विश्व की सात अरब लोगों तक अपना यह संदेश पहुंचाना है। पूरी दुनिया के अनेक विश्वविद्यालयों और सामाजिक संगठनों द्वारा उन्हें नियमित रूप से बोलने के लिए आमंत्रित किया जाता है। यूनाइटेड नेशन्स कान्फ्रेंस सेंटर, हारवर्ड एवं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूरोपियन पार्लियामेंट, ऑस्ट्रेलियन व न्यूजीलैंड पार्लियामेंट सहित विश्व के कई प्रतिष्ठित मंचों पर वे अपना संदेश सुना चुके हैं। हाल ही में उन्हें दूसरी बार यूरोपियन पार्लियामेंट में अपना संदेश सुनाने के लिए आमंत्रित किया गया। विश्व की कई जेलों में भी लोग उनका संदेश नियमित रूप से सुन रहे हैं, उनके संदेश से प्रभावित कैदियों एवं जेल स्टाफ के आमंत्रण पर उन्होंने भारत में तिहाड़ जेल, अर्जेन्टीना में एक महिला जेल और अमेरिका की सेंट एंटिनियो जेल में स्वयं जाकर प्रोग्राम किए हैं।

हेल्पलाइन नंबर

011 26654700, 09899292465

राज विद्या केन्द्र

शहूरपुर, छत्तरपुर, नई दिल्ली-110074

फोन : 011 26654921-23

फैक्स : 011 26654502

ईमेल : [rvkender@vsnl.net](mailto:rvkender@vsnl.net)

[www.tprf.org](http://www.tprf.org)

[www.rajvidyakender.org](http://www.rajvidyakender.org)

